E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
www.allstudyjournal.com
IJAAS 2025; 7(8): 40-43
Received: 14-06-2025
Accepted: 17-07-2025

शिवानी कुशवाहा
शोध छात्रा, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
शिवानी कुशवाहा
शोध छात्रा, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

विनोद कुमार शुक्ल के साहित्य में पर्यावरण चेतना

शिवानी कुशवाहा

DOI: https://www.doi.org/10.33545/27068919.2025.v7.i8a.1607

सारांश

विनोद कुमार शुक्ल एक बड़े रचनाकार हैं बड़ा रचनाकार वह होता है जो अपने समय की सबसे गंभीर समस्याओं से टकराता है, उनकी मीमांसा करता है साथ ही वह उस संकट से निकलने का रास्ता भी सुझाता है। आज के समय में पर्यावरण संकट नामक ऐसा ही एक संकट मानव जाति के समक्ष मुँह बाए खड़ा है ऐसे में अपने काल का एक बड़ा रचनाकार क्या किसी ऐसे संकट से आँखें मूदकर निरपेक्ष रह सकता है जिसमें इतनी क्षमता हो कि वह सम्पूर्ण मानव जाति का अस्तित्व मिटा दे? बिल्कुल नहीं रह सकता विनोद कुमार शुक्ल जी का नाम लेते ही सभी के जेहन में 'नौकर की कमीज' (उपन्यास) और 'वह आदमी चला गया नया गरम कोट पहिनकर विचार की तरह' (कविता–संग्रह) कौंध जाता है। कुछ अन्य पाठकों के मन में 'दीवार में एक खिड़की रहती थी' (उपन्यास) और 'महाविद्यालय' (कहानी–संग्रह) का नाम भी उभर आता है उपर्युक्त उपन्यास, कहानी और कविता संग्रह प्रायः निम्नमध्यवर्गीय समाज से सम्बद्ध है, यही कारण है कि शुक्ल जी की रचनाओं को प्रायः निम्नमध्यवर्गीय समाज और निम्नमध्यवर्गीय चेतना से जोड़कर देखा जाता है लेकिन उन्होंने निम्नमध्यवर्गीय समाज के दायरे से बाहर निकलकर भी बहुत कुछ लिखा है उसी में से एक तत्त्व है 'पर्यावरण चेतना'।

कुट शब्द : साहित्य, समाज, चेतना, पर्यावरण, निम्नमध्यवर्ग, अस्तित्व, अस्मिता।

प्रस्तावना

आलेख– इस सन्दर्भ में सबसे पहले यह समझना आवश्यक है कि पर्यावरण चेतना आखिर है क्या? साथ ही यह भी देखना भी आवश्यक होगा कि प्रकृ ति चेतना और पर्यावरण चेतना में अंतर क्या है? प्रकृति चेतना और पर्यावरण चेतना समान रास्ते पर गतिशील दो अवधारणायें हैं, जो कहीं–कहीं आपस में मिल जाती हैं इनमें अंतर है तो मात्र डिग्री का जब कोई व्यक्ति अपने आस–पास के जीवधारियों और संसाधनों के प्रति सजग होता है तो यह कहा जा सकता है कि वह व्यक्ति प्रकृति चेतना से संपन्न है। ऐसा व्यक्ति इस बात का ख्याल रखता है कि अगर वह रास्ते में चल रहा है और उसके पैरों तले कोई चींटी या अन्य कोई सूक्ष्म जीवधारी आने वाला है तो वह वहाँ कदम नहीं रखेगा वह बगल से चला जाएगा वह नदी के जल का प्रयोग करते हुए यह ध्यान रखेगा कि वह उसे दूषित न करे यदि कोई गाय उसके दरवाजे पर चली आए तो वह उसे रोटी दे देगा वह भरसक प्रयत्न करेगा कि किसी जीवधारी को चोट न पहुँचाए वह अपने

आस–पास के पर्यावरण से प्रेम करेगा ऐसे व्यक्ति के बारे में कहा जा सकता है कि वह प्रकृति चेतना से युक्त है प्रकृति चेतना के भीतर व्यक्ति अपने परिवेश के प्रति सजग होता है वह प्रकृति से प्रेम करता है यदि वह कहीं संसाधनों का दोहन होते हुए देखता है तो चिंतित हो जाता है। प्रकृति चेतना इतने पर ही आकर रुक जाती है पर्यावरण चेतना की राह यहीं से आरम्भ होती है प्रकृति चेतना से संपन्न व्यक्ति संसाधनों का अपव्यय, जीवधारियों का नाश देखकर चिंतित तो होता है परन्तु वह उनकी रक्षा हेतु कोई कदम नहीं उठाता वह उतना ही कर सकता है जो बिना किसी अतिरिक्त श्रम के संभव हो सके वह व्यक्ति सक्रिय रूप से संसाधनों के अपव्यय या जीवों के नाश को रोकने हेतु कोई प्रयास नहीं करता पर्यावरण चेतना से संपन्न व्यक्ति पर्यावरण ह्रास के लिए उत्तरदायी कारकों को रोकने हेतु मात्र चिंतित ही नहीं होता है, अपितु वह उन्हें रोकने का प्रयास भी करता है वह पर्यावरण ह्रास के लिए उत्तरदायी कारकों की पड़ताल करता है वह उन कारकों की समालोचना करता है यदि शासन व्यवस्था ह्रास को रोकने हेतु समुचित कदम नहीं उठाती तो वह उसकी आलोचना करता है। वह घर में बैठकर मुक्तिबोध का ब्रह्मराक्षस नहीं बनता है, बल्कि घर से बाहर निकलकर आन्दोलन करता है वह संसद से सड़क तक अपनी आवाज उठाता है और निरंतर प्रयास करता है कि उस व्यवस्था को प्रकृति के हित में मोड़ा जा सके जो प्रकृति के दोहन में लगी हुई है इस रूप में पर्यावरण चेतना प्रकृति चेतना के आगे का स्तर है। प्रकृति चेतना एक बड़ा वृत्त है और पर्यावरण चेतना उसके भीतर एक छोटा वृत्त इसे ऐसे भी समझा जा सकता है कि प्रत्येक पर्यावरण चेतना से संपन्न व्यक्ति प्रकृति चेतना से युक्त होगा परन्तु प्रत्येक प्रकृति चेतना युक्त व्यक्ति पर्यावरण चैतन्य हो यह आवश्यक नहीं।

उपर्युक्त अर्थ में विनोद कुमार शुक्ल निःसंदेह पर्यावरण चेतना संपन्न रचनाकार हैं वे पर्यावरण की दुर्दशा देखकर मात्र चिंतित नहीं होते हैं, अपितु उनका समाधान भी प्रस्तुत करते हैं परन्तु यह समाधान यूँ ही नहीं मिल जाता इसे खोजना पड़ता है असल में शुक्ल जी की रचनाओं में उनकी पर्यावरण चेतना के तत्त्व जगह–जगह बिखरे पड़े हैं, वे किसी एक स्थान पर एक साथ नहीं मिलते उनका एक साथ एक स्थान पर मिल पाना संभव भी नहीं हो सकता क्योंकि कोई रचनाकार यह सोचकर कोई साहित्यिक रचना नहीं करता है कि किसी विषय का सम्पूर्ण ब्यौरा एक ही स्थान पर चित्रित कर देना है ऐसा करना संभव तो है, परन्तु वैज्ञानिक लेखन में साहित्यिक लेखन में नहीं साहित्य संवेदनाओं पर आधारित होता है और विज्ञान तथ्यों और नियमों पर साहित्य मूल्यपरक समाधान प्रस्तुत करता है और विज्ञान वस्तुनिष्ठ यही कारण है कि साहित्य में चीजें एक ही स्थान पर एक साथ नहीं मिलती जैसे भावनाओं और संवेदनाओं का कोई क्रम नहीं होता है, ठीक वैसे ही साहित्य किसी क्रम में नहीं चल सकता उसे क्रम में लाने का कार्य आलोचकों और शोधार्थियों का है।

शुक्ल जी की पर्यावरण चेतना का सबसे प्रमुख तत्त्व है 'प्रकृति की श्रेष्ठता' उन्होंने स्वीकार किया है कि प्रकृति ही श्रेष्ठ है और मनुष्य उससे पार नहीं पा सकता 'यासि रासा त' नामक उपन्यास में शुक्ल जी की एक छोटी–सी कविता की कुछ पंक्तियाँ देखिये–

अच्छा सोचो–
चिड़ियों का घोंसला बना पहले
या मनुष्य का पहले घर ?
चिड़ियों ने बनाया होगा घोंसला पहले
मनुष्य ने तो बनी–बनाई
पहाड़ की गुफा में रहकर
घर को जाना
घर बनाना चिड़ियों ने
मनुष्य से नहीं सीखा
यह तय है
घोंसले को बनते देख
घर बनाना सीखा मनुष्य ने
यह लगभग तय है
या सचमुच तय है ?

यहाँ कहने का अर्थ यह है कि मनुष्य ने केवल घर बनाना ही नहीं बल्कि सबकुछ प्रकृति से ही सीखा है वह कोई सर्वज्ञानी और सर्वगुणी नहीं है उसने जो भी प्राप्त किया है उसे सब कुछ प्रकृति ने ही उसे दिया है समस्या तो वहाँ पर उत्पन्न होती है जब मनुष्य स्वयं को ही कर्ता और नियामक समझने लगता है वह यह भूल जाता है

कि वह स्वयं में शक्ति का स्त्रोत नहीं वरन् शक्ति का एक स्वरूप मात्र है स्वयं को शक्ति का स्त्रोत समझकर वह प्रकृति से ही टकरा जाता है और यहीं से आरम्भ होता है। पर्यावरण ह्रास और पर्यावरण संकट का छायावादी प्रकृति की पूर्णता से प्रभावित होकर नामवर सिंह जी ने लिखा था– "तात्पर्य यह है कि छायावादी कवियों का प्रकृति की ओर झुकना, प्रकृति को इतना महत्त्व देना, प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता को काव्य में प्रतिष्टित करना और

प्रकृति के सौंदर्य को उद्घाटित करना– यह सब आधुनिक विज्ञान का परिणाम है विज्ञान ने प्रकृति के रहस्यों को जानने की चेष्टा की ...धार्मिक अन्धविश्वास ने जिस प्रकृति से मानव को बाँध रखा था, विज्ञान ने उसी को बंधन से मुक्त किया विज्ञान ने मनुष्य को प्रकृति से अलगाकर फिर उसे प्रकृति के साथ अच्छी तरह से लगा दिया ... इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि जिस युग में मनुष्य ने प्रकृति पर सबसे अधिक विजय प्राप्त की, उसी समय उसने प्रकृति पर सबसे अच्छी कविताएँ लिखीं" प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का जो कार्य छायावादी युग में विज्ञान कर रहा था। 21वीं शताब्दी मे यह विज्ञान और बाज़ारवाद के सम्मिलित प्रभाव से संभव हुआ विज्ञान के साथ बाज़ार के मिल जाने से यह टकराहट और अधिक बढ़ गई अब नामवर जी की बात को स्वीकार करें तो प्रकृति के साथ जितनी अधिक टकराहट जिस युग में होगी उस युग में प्रकृति पर उतनी अच्छी कविता लिखी जायेगी इस अर्थ में आज जब प्रकृति के साथ मनुष्य की टकराहट सर्वाधिक है तब 21वीं शताब्दी में प्रकृति पर सबसे अच्छी कविता लिखी।

'महाविद्यालय' में प्रायः पर्यावरण चेतना नहीं दिखाई पड़ती जबकि उसी स्थान पर बच्चों के लिए लिखे गए अन्य तीनों उपन्यासों और कहानियों में पर्यावरण चेतना सर्वत्र विद्यमान है जाहिर है कि वे चाहते हैं कि पर्यावरण चेतना का विकास बच्चों में बचपन से ही किया जाए यदि वे पर्यावरण के प्रति सजग रहेंगे तो पृथ्वी भी बची रहेगी यही कारण है कि उनके बच्चों के लिए लिखे गए उपन्यासों और कहानियों में 'प्रकृति के प्रति करुणा भाव' और 'प्रकृति की ओर लौटने' की अभिव्यक्ति बार–बार हुई है उनके कथा साहित्य में बार–बार वृक्षों का जिक्र आना, बार–बार उन्हें बचाने की कोशिश करना, उनके साथ रहने पर खुश रहना, वृक्षों के मध्य रहने पर घर का घर लगना जैसे दृश्य यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि उन्हें वृक्षों से कितना प्रेम है लेकिन शुक्ल जी का प्रकृति के प्रति प्रेम–भाव मात्र करुणा तक ही सीमित नहीं रहता यह उससे आगे बढ़ता है शुक्ल जी की कहानियों के पात्र वृक्षों के लिए सक्रिय कदम उठाते हैं वे घर भी ऐसा खोजते हैं जहाँ वृक्ष हों बिना पेड़ का घर उन्हें स्वीकार नहीं शुक्ल जी की कहानियों के नाम ही यह बतलाने के लिए पर्याप्त हैं कि उनके स्वयं के जीवन में वृक्षों का क्या महत्त्व रहा होगा? 'पेड़ पर कमरा', 'पेड़ नहीं बैठता', 'गमले में जंगल' आदि जैसे नाम यह बताने के लिए पर्याप्त हैं कि वृक्ष उनके लिए क्या हैं ? शुक्ल जी के लिए वृक्ष मात्र बड़े–बड़े तनों पर लटकी छोटी–छोटी पत्तियों वाली कोई संरचना नहीं बल्कि परिवार का हिस्सा हैं उनके बिना उनके पात्रों का जीवन कठिन हो जाता है। वे व्याकुल हो जाते हैं उन्हें वह घर, घर नहीं लगता जहाँ वृक्ष न हो जीवधारियों के प्रति इस प्रकार का प्रेम उनकी कहानियों को प्रकृति प्रेम से आगे बढ़कर पर्यावरण चैतन्य कर देता है, और कहा जा सकता है कि उनकी कहानियाँ पर्यावरणीय संवेदना से भर जाती हैं।

पर्यावरण चेतना से भरी हुई उनकी एक कहानी 'गोदाम' अतुलनीय है इस कहानी का नायक एक ऐसे घर में किराए पर रहता है जिसमें एक वृक्ष है। एक दिन मकान मालिक किसी कारणवश उसे घर खाली करने को कहता है पर वह घर खाली नहीं करता बातों–बातों में वह मकान मालिक को बता देता है कि मैं सिर्फ ऐसे घरों में रहता हूँ जिनके अन्दर कोई पेड़ हो बस मकान मालिक उस पेड़ को कटवा देता है शुक्ल जी की निम्न पंक्तियाँ इस प्रसंग को बहुत गहरी संवेदना से भर देती हैं।

मकान मालिक जैसे मेरा इन्तजार कर रहा था आते ही उसने कहा, "आपका अब यह एक पेड़ वाला घर नहीं है"।

"जी !" मैंने कहा आपने मुझे निकालने के लिए पेड़ तक कटवा दिया"

पर्यावरण संवेदना और प्रकृति प्रेम के सन्दर्भ में 'गोदाम' कहानी की मार्मिकता की तुलना किसी अन्य कहानी से नहीं की जा सकती वृक्षों के प्रति

इस तरह का प्रेम, ऐसा लगाव कहानियों में दुर्लभ है इसी तरह 'हेलमेट' कहानी में नायक का चिड़िया के बच्चों और उनके घोंसले के लिए अपने हेलमेट और साइकिल को छोड़ देना यह बताने के लिए पर्याप्त है कि उनके मन में प्रत्येक छोटे से छोटे जीव के लिए कितनी गहरी संवेदना है। 'शहर में एक तितली दिखी' एक नन्ही सी तितली के ऊपर लिखी गई अभूतपूर्व लघु–कथा है एक तितली शहर देखने निकली है लेकिन शहर में किसी के पास इतना वक़्त ही नहीं है कि कोई उस तितली को देखे अंत में सिर्फ एक लड़का तितली पर ध्यान देता है बाद में पता चलता है कि वह लड़का भी शहर देखने आया था कितना गहरा व्यंग्य है यह शहरीकरण की भावना पर यह कहानी बताती है कि शहरीकरण की भावना ने मनुष्य को प्रकृति से पूरी तरह विमुख कर दिया है कहानियों में पर्यावरण के प्रति ऐसी संवेदना शुक्ल जी के पहले देखने को नहीं मिलती यहाँ नामवर जी की बात पुनः याद आ जाती है कि जिस काल में मानव और प्रकृति के मध्य जितना संघर्ष होगा उस काल में प्रकृति पर उतना ही अच्छा साहित्य लिखा जाएगा हालांकि उन्होंने यह बात कविता के सन्दर्भ में कही थी लेकिन शुक्ल जी की रचनाओं को देखकर यह कहना पड़ेगा कि यह बात मात्र कविता के लिए नहीं बल्कि अन्य साहित्यिक विधाओं के लिए भी पूर्णतः सत्य है।

निष्कर्ष– पर्यावरण चेतना शुक्ल जी के साहित्य का एक ऐसा पहलू है जिस पर अभी ठीक ढंग से विचार नहीं किया गया है शुक्ल जी के साहित्य में पर्यावरण चेतना मात्र कविता तक ही सीमित नहीं है, यह उनकी कहानियों और उपन्यासों में भी है जिन–जिन विधाओं में भी शुक्ल जी ने रचना की है वहाँ उन्होंने प्रकृति की ओर लौटने की बात अवश्य की है उन्हें मालूम है की यदि अब भी मनुष्य नहीं चेता तो बाद में उसे समय नहीं मिलेगा यही कारण है कि वे समझाते हैं कि पर्यावरणीय समस्याएँ समाधानहीन नहीं हैं उनका निदान संभव है बस आवश्यकता है प्रकृति को समझने की और पुनः प्रकृति की ओर लौटने की।

संदर्भ

1. विनोद कुमार शुक्ल; यासि रासा त; हार्परकालिंस पब्लिशर्स; संस्करण– 2017; पृष्ठ संख्या– 63–64
2. नामवर सिंह; छायावाद; राजकमल प्रकाशन; बीसवाँ संस्करण– 2016; पृष्ठ संख्या– 37–38
3. विनोद कुमार शुक्ल; कभी के बाद अभी; राजकमल पेपरबैक्स; दूसरा संस्करण– 2023; पृष्ठ संख्या–24
4. विनोद कुमार शुक्ल; एक चुप्पी जगह; जुगनू प्रकाशन; पहला संस्करण–2018; पृष्ठ संख्या–7
5. विनोद कुमार शुक्ल; गोदाम; जुगनू प्रकाशन; पहला संस्करण–2018; पृष्ठ संख्या–8